388-3-3-16

Name of Scholar: Md Zafar Eqbal

Name of Supervisor: Dr. A. R. Musawwir

Department: Hindi

Topic: HINDI AUR URDU KI NAI KAVITA KA TULNATMAK ADDHYAYAN

ABSTRACT

की वर्डः नयी कविता, लघुमानव, मूल्यों का संकट, अनुभूति, अकेलापन

प्रस्तावनाः हिन्दी और उर्दू की नयी कविता की समानताओं और विषमताओं को केन्द्र में रखकर इस अध्ययन की रूपरेखा बनाई गई है। कुछ बिन्दुओं के आधार पर इस समानता तथा विषमता का आकलन करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए विषय को छः अध्याय में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय *'हिन्दी और उर्दू की नयी कविता'* पर केन्द्रित है। इस अध्याय में हिन्दी तथा उर्दू की नयी कविता के विकास क्रम तथा उसकी प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया है। दोनों भाषा की कविता में बहुत सी समान प्रवृत्तियाँ हैं। काल विभाजन के आधार पर भी दोनों भाषाओं की नयी कविता समानांतर चलती हैं।

द्वितीय अध्याय *'हिन्दी तथा उर्दू की नयी कविता में कथ्य और अनुभूति'* पर आधारित है। उर्दू की नयी कविता में कथ्य का विस्तार अधिक है। राशिद तथा अख़्तरुल ईमान की कविता इसका प्रमाण है। दोनों भाषाओं की कविता अनुभूति की गहराई के महत्व को स्वीकार करती हैं।

तृतीय अध्याय *'हिन्दी और उर्दू की नयी कविता में परंपरा और मूल्यों का संकट'* पर केन्द्रित है। हिन्दी के कवि अज्ञेय और मुक्तिबोध तथा उर्दू के कवि मीराजी की कविता में परंपरा तथा

नवीनता की टकराहट अधिक है। मुक्तिबोध तथा राशिद ने मूल्यों के संकट पर सर्वाधिक विचार किया है।

चौथे अध्याय में *'हिन्दी और उर्दू की नयी कविता में कलात्मकता और सौन्दर्यबोध'* के अन्तर्गत नयी कविता के सौन्र्यबोध, शिल्प तथा भाषा–शैली का अध्ययन किया गया है। नयी कविता ने नया सौंदर्यबोध विकसित किया है। शिल्प के पुराने साँचों को तोड़ा है। हिन्दी के नये कवि शमशेर की कविता पर उर्दू भाषा का प्रभाव अधिक है वहीं उर्दू के कवि मीराजी की भाषा पर हिन्दी भाषा का अधिक प्रभाव है।

पाँचवा अध्याय *'हिन्दी और उर्दू की नयी कविता में प्रेम का चित्रण'* पर आधारित है। हिन्दी की नयी कविता की अपेक्षा उर्दू की नयी कविता में प्रेम चित्रण अधिक है। हिन्दी के कवियों में शमशेर ने प्रेम को महत्व दिया है। उर्दू की नयी कविता में प्रेम का खुल कर वर्णन हुआ है। मीराजी कई बार प्रेम में स्वयं को स्त्री के रूप में प्रस्तुत करते हैं। राशिद प्रेम में इन्तक़ाम की हद तक पहँच जाते हैं ऐसे में उनकी कविता अश्लीलता की ओर बढ़ने लगती है।

छठा अध्याय *'हिन्दी और उर्दू की नयी कविता में वैचारिकी'* पर केंद्रित है। नयी कविता में किसी विशेष विचारधारा को महत्व नहीं दिया गया है। ये विचारों की बहुलता का काव्य है। हिन्दी के कवियों में मुक्तिबोध ने तथा उर्दू के कवियों में राशिद ने विचार को सर्वाधिक महत्व दिया है।

निष्कर्षः दोनों भाषाओं की नयी कविता में बहुत सी समानता है। दरअसल दोनों भाषा एक ही परंपरा की साझीदार हैं इसलिए देश विभाजन के बाद भी उनकी परंपरा विभाजित नहीं हो सकीं। दोनों भाषाओं की कविता उसी साझी विरासत का हिस्सा हैं जिसे सरहदें कभी बाँट नहीं सकतीं।